

रविवार 4 अगस्त, 2019

विषय — प्रेम

स्वर्ण पाठ: रोमियो 8 : 28

“जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उन के लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती है।”

उत्तरदायी अध्ययन: I यूहन्ना 4 : 7-12

- 7 हे प्रियों, हम तुम में प्रेम रखो; क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है: और जो कोई प्रेम नहीं करता, वह भगवान से जन्मा है; और भगवान को पता है।
- 8 जो प्रेम नहीं रखता, वह भगवान को नहीं जानता, क्योंकि भगवान प्रेम है।
- 9 जो प्रेम भगवान हम से रखता है, वह इस से प्रकट हुआ, कि भगवान ने अपने एकलौते पुत्र को अवतार में भेजा है, कि हम उसके द्वारा जीवन पाएं।
- 10 प्रेम इस में नहीं कि हमने भगवान को प्रेम किया है; पर इस में है, कि उसने हम से प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित्त के लिए अपने पुत्र को भेजा।
- 11 हे प्रियो, जब भगवान ने हम से ऐसा प्रेम किया, तो हम को भी आपस में प्रेम रखना चाहिए।
- 12 भगवान को कभी किसी ने नहीं देखा; यदि हम आपस में प्रेम रखते हैं, तो परमेश्वर हम में बना रहता है; और उसका प्रेम हम में अनुक्रम हो गया है।

पाठ उपदेश

बाइबल

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

1. यिर्मयाह 31 : 3

- 3 यहोवा ने मुझे दूर से दर्शन देकर कहा है। मैं तुझ से सदा प्रेम रखता आया हूँ; इस कारण मैं ने तुझ पर अपनी करुणा बनाए रखी है।

2. भजन संहिता 36 : 7

- 7 हे परमेश्वर तेरी करुणा, कैसी अनमोल है! मनुष्य तेरे पंखों के तले शरण लेते हैं।

3. I शमूएल 17 : 57 (जैसा) (शाऊल को), 58

- 57 जब दाऊद पलिशती को मारकर लौटा, तब अब्नेर ने उसे पलिशती का सिर हाथ में लिए हुए शाऊल के साम्हने पहुंचाया।
58 शाऊल ने उस से पूछा, हे जवान, तू किस का पुत्र है? दाऊद ने कहा, मैं तो तेरे दास बेतलेहेमी यिशै का पुत्र हूँ॥

4. I शमूएल 18 : 1, 3, 4, 6 (घटित होना), 6 (कि)-9

- 1 जब वह शाऊल से बातें कर चुका, तब योनातान का मन दाऊद पर ऐसा लग गया, कि योनातान उसे अपने प्राण के बराबर प्यार करने लगा।
3 तब योनातान ने दाऊद से वाचा बान्धी, क्योंकि वह उसको अपने प्राण के बराबर प्यार करता था।
4 और योनातान ने अपना बागा जो वह स्वयं पहिने था उतारकर अपने वस्त्र समेत दाऊद को दे दिया, वरन अपनी तलवार और धनुष और कटिबन्ध भी उसको दे दिए।
6 जब दाऊद उस पलिशती को मारकर लौटा आता था, और वे सब लोग भी आ रहे थे, तब सब इस्राएली नगरों से स्त्रियों ने निकलकर डफ और तिकोने बाजे लिए हुए, आनन्द के साथ गाती और नाचती हुई, शाऊल राजा के स्वागत में निकलीं।
7 और वे स्त्रियां नाचती हुई एक दूसरी के साथ यह गाती गईं, कि शाऊल ने तो हजारों को, परन्तु दाऊद ने लाखों को मारा है॥
8 तब शाऊल अति क्रोधित हुआ, और यह बात उसको बुरी लगी; और वह कहने लगा, उन्होंने दाऊद के लिये तो लाखों और मेरे लिये हजारों को ठहराया; इसलिये अब राज्य को छोड़ उसको अब क्या मिलना बाकी है?

9 तब उस दिन से भविष्य में शाऊल दाऊद की ताक में लगा रहा॥

5. I शमूएल 19 : 1, 2

- 1 और शाऊल ने अपने पुत्र योनातन और अपने सब कर्मचारियों से दाऊद को मार डालने की चर्चा की।
परन्तु शाऊल का पुत्र योनातन दाऊद से बहुत प्रसन्न था।
2 और योनातन ने दाऊद को बताया, कि मेरा पिता तुझे मरवा डालना चाहता है; इसलिये तू बिहान को सावधान रहना, और किसी गुप्त स्थान में बैठा हुआ छिपा रहना;

6. I शमूएल 23: 14, 16-18 (से :)

- 14 जब दाऊद जो जंगल के गढ़ों में रहने लगा, और पहाड़ी देश के जीप नाम जंगल में रहा। और शाऊल उसे प्रति दिन ढूंढता रहा, परन्तु परमेश्वर ने उसे उसके हाथ में न पड़ने दिया।
16 कि शाऊल का पुत्र योनातन उठ कर उसके पास होरेश में गया, और परमेश्वर की चर्चा करके उसको ढाढस दिलाया।
17 उसने उस से कहा, मत डर; क्योंकि तू मेरे पिता शाऊल के हाथ में न पड़ेगा; और तू ही इस्राएल का राजा होगा, और मैं तेरे नीचे हूंगा; और इस बात को मेरा पिता शाऊल भी जानता है।
18 तब उन दोनों ने यहोवा की शपथ खाकर आपस में वाचा बान्धी;

7. मत्ती 4 : 23 (यीशु) (से 3rd ,)

- 23 और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उन की सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा।

8. मत्ती 5 : 1, 2, 43-48

- 1 वह इस भीड़ को देखकर, पहाड़ पर चढ़ गया; और जब बैठ गया तो उसके चेले उसके पास आए।
2 और वह अपना मुंह खोलकर उन्हें यह उपदेश देने लगा,
43 तुम सुन चुके हो, कि कहा गया था; कि अपने पड़ोसी से प्रेम रखना, और अपने बैरी से बैर।
44 परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ, कि अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सताने वालों के लिये प्रार्थना करो।
45 जिस से तुम अपने स्वर्गीय पिता की सन्तान ठहरोगे क्योंकि वह भलों और बुरों दोनों पर अपना सूर्य उदय करता है, और धर्मियों और अधर्मियों दोनों पर मेंह बरसाता है।

- 46 क्योंकि यदि तुम अपने प्रेम रखने वालों ही से प्रेम रखो, तो तुम्हारे लिये क्या फल होगा? क्या महसूल लेने वाले भी ऐसा ही नहीं करते?
- 47 और यदि तुम केवल अपने भाइयों ही को नमस्कार करो, तो कौन सा बड़ा काम करते हो? क्या अन्यजाति भी ऐसा नहीं करते?
- 48 इसलिये चाहिये कि तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है॥

9. मत्ती 20 : 30-34

- 30 और देखो, दो अन्धे, जो सड़कर के किनारे बैठे थे, यह सुनकर कि यीशु जा रहा है, पुकारकर कहने लगे; कि हे प्रभु, दाऊद की सन्तान, हम पर दया कर।
- 31 लोगों ने उन्हें डांटा, कि चुप रहें, पर वे और भी चिल्लाकर बोले, हे प्रभु, दाऊद की सन्तान, हम पर दया कर।
- 32 तब यीशु ने खड़े होकर, उन्हें बुलाया, और कहा;
- 33 तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये करूं? उन्होंने ने उस से कहा, हे प्रभु; यह कि हमारी आंखे खुल जाएं।
- 34 यीशु ने तरस खाकर उन की आंखे छूई, और वे तुरन्त देखने लगे; और उसके पीछे हो लिए॥

10. यूहन्ना 15 : 8, 9, 12

- 8 मेरे पिता की महिमा इसी से होती है, कि तुम बहुत सा फल लाओ, तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे।
- 9 जैसा पिता ने मुझ से प्रेम रखा, वैसा ही मैं ने तुम से प्रेम रखा, मेरे प्रेम में बने रहो।
- 12 मेरी आज्ञा यह है, कि जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो।

11. रोमियो 8 : 35, 37-39

- 35 कौन हम को मसीह के प्रेम से अलग करेगा? क्या क्लेश, या संकट, या उपद्रव, या अकाल, या नंगार्ई, या जोखिम, या तलवार?
- 37 परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिस ने हम से प्रेम किया है, जयवन्त से भी बढ़कर हैं।
- 38 क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं, कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएं, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ, न ऊंचाई,
- 39 न गहिराई और न कोई और सृष्टि, हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 243 : 4-13

दैवीय प्रेम, जिसने जहरीली सांप को हानिरहित बना दिया, जिसने उबलते हुए तेल से पुरुषों को ज्वलंत भट्टी से, शेर के जबड़े से, हर उम्र में बीमार और पाप और विजय से मृत्यु तक पहुंचाया। इसने नायाब शक्ति और प्रेम के साथ यीशु के प्रदर्शनों को ताज पहनाया। लेकिन भविष्यद्वक्ताओं और प्रेरितों के प्राचीन प्रदर्शनों की पुष्टि करने और उन्हें दोहराने के लिए उसी "मन ... जो मसीह यीशु में भी था" हमेशा विज्ञान के पत्र के साथ होना चाहिए।

2. 112 : 32-6

ईश्वर दिव्य तत्वमीमांसा का सिद्धांत है। जैसा कि एक ईश्वर है, लेकिन सभी विज्ञानों का एक ईश्वरीय सिद्धांत हो सकता है; और इस ईश्वरीय सिद्धांत के प्रदर्शन के लिए निश्चित नियम होने चाहिए। विज्ञान का पत्र बहुतायत से आज मानवता तक पहुंचता है, लेकिन इसकी भावना केवल छोटी डिग्री में आती है। ईसाई विज्ञान का महत्वपूर्ण हिस्सा, हृदय और आत्मा, प्रेम है।

3. 285 : 23-31

ईश्वर को एक कॉर्पोरल उद्धारकर्ता के रूप में व्याख्या करने के लिए लेकिन बचत सिद्धांत या ईश्वरीय प्रेम के रूप में नहीं, हम क्षमा के माध्यम से मोक्ष प्राप्त करना जारी रखेंगे, न कि सुधार के माध्यम से, और बीमारों के इलाज के लिए आत्मा के बजाय मामले का सहारा लेंगे। जैसा कि नश्वर तक पहुँचते हैं, क्रिश्चियन साइंस के ज्ञान के माध्यम से, एक उच्च भावना, वे सीखने की तलाश करेंगे, न कि पदार्थ से, बल्कि ईश्वरीय सिद्धांत से, ईश्वर, मसीह, सत्य, को उपचार और बचत शक्ति के रूप में कैसे प्रदर्शित करें।

4. 454 : 17-23

ईश्वर और मनुष्य के लिए प्यार हीलिंग और शिक्षण दोनों में सच्चा प्रोत्साहन है। प्रेम प्रेरणा देता है, रोशनी करता है, नामित करता है और मार्ग प्रशस्त करता है। सही इरादों ने विचार, और ताकत और बोलने और कार्रवाई करने की स्वतंत्रता को चुटकी दी। सत्य की वेदी पर प्रेम पुरोहिती है। दिव्य प्रेम के लिए धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करें नश्वर मन के पानी पर आगे बढ़ने के लिए, और सही अवधारणा बनाएं।

5. 230 : 1-10

यदि बीमारी वास्तविक है, तो यह अमरता से संबंधित है; अगर यह सच है, यह सत्य का एक हिस्सा है। क्या आप सत्य की गुणवत्ता या स्थिति को नष्ट करने के लिए दवाओं के साथ या बिना प्रयास करेंगे? लेकिन अगर बीमारी और पाप भ्रम हैं, तो इस नश्वर सपने से जागृति, या भ्रम, हमें स्वास्थ्य, पवित्रता और अमरता में लाएगा। यह जागृति हमेशा के लिए मसीह के आने की है, सत्य का उन्नत रूप है, जो त्रुटि को बाहर निकालता है और बीमारों को ठीक करता है। यह वह मोक्ष है जो ईश्वर, ईश्वरीय सिद्धांत और प्रेम के माध्यम से आता है, जैसा कि यीशु द्वारा प्रदर्शित किया गया है।

6. 366 : 12-19

जिस चिकित्सक को अपने साथी के प्रति सहानुभूति की कमी है, वह मानवीय स्नेह में कमी है, और हमारे पास पूछने के लिए एपोस्टोलिक वारंट है "जो अपने भाई से, जिस उस ने देखा है, प्रेम नहीं रखता, तो वह परमेश्वर से भी जिसे उस ने नहीं देखा, प्रेम नहीं रख सकता।" इस आध्यात्मिक स्नेह के न होने पर, चिकित्सक को दिव्य मन में विश्वास की कमी है और असीम प्रेम की मान्यता नहीं है जो अकेले ही चिकित्सा शक्ति प्रदान करता है।

7. 248 : 26-32

हमें विचार में आदर्श मॉडल बनाना चाहिए और उन्हें लगातार देखना चाहिए, या हम उन्हें भव्य और महान जीवन में कभी नहीं उकेरेंगे। निःस्वार्थता, अच्छाई, दया, न्याय, स्वास्थ्य, पवित्रता, प्रेम - स्वर्ग का राज्य - हमारे भीतर राज करो, और पाप, बीमारी, और मृत्यु तब तक कम हो जाएगी जब तक वे अंततः गायब नहीं हो जाते।

8. 326 : 3-11

यदि हम मसीह, सत्य का पालन करना चाहते हैं, तो यह भगवान की नियुक्ति के रास्ते में होना चाहिए। यीशु ने यह कहा: "कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूं वह भी करेगा।" वह, जो स्रोत तक पहुंच जाएगा और हर बीमार के लिए दिव्य उपाय ढूंढेगा, उसे किसी अन्य सड़क से विज्ञान की पहाड़ी पर चढ़ने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। सभी प्रकृति मनुष्य को ईश्वर का प्यार सिखाती है, लेकिन मनुष्य ईश्वर से प्रेम नहीं कर सकता है और आध्यात्मिक चीजों पर अपना पूरा प्यार कायम कर सकता है, जबकि सामग्री से प्रेम कर सकता है या आध्यात्मिक से अधिक उस पर भरोसा कर सकता है।

9. 304 : 3-15

यह अज्ञानता और असत्य विश्वास है, भौतिक वस्तुओं पर आधारित है, जो आध्यात्मिक सुंदरता और अच्छाई को छिपाते हैं। इसे समझते हुए, पॉल ने कहा: "न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएं, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ्य, न ऊंचाई, न गहिराई और न कोई और सृष्टि, हमें परमेश्वर के प्रेम से.... अलग कर सकेगी॥" यह क्रिश्चियन साइंस का सिद्धांत है: उस दिव्य प्रेम को उसकी अभिव्यक्ति, या वस्तु से वंचित नहीं किया जा सकता है; वह आनन्द दुःख में नहीं बदल सकता, क्योंकि दुःख आनन्द का स्वामी नहीं है; वह अच्छाई कभी बुराई पैदा नहीं कर सकती; वह पदार्थ कभी भी मन उत्पन्न नहीं कर सकता है और न ही जीवन का परिणाम मृत्यु है। पूर्ण पुरुष - भगवान द्वारा शासित, उनका सिद्ध सिद्धांत - पाप रहित और शाश्वत है।

10. 410 : 14-21

ईश्वर में हमारी आस्था का हर परीक्षण हमें मजबूत बनाता है। आत्मा से पार पाने के लिए भौतिक स्थिति जितनी कठिन लगती है, उतनी ही मजबूत हमारे विश्वास और हमारे प्रेम को शुद्ध करना चाहिए। प्रेरित यूहन्ना कहता है: "प्रेम में भय नहीं होता, वरन सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है, ... जो भय करता है, वह प्रेम में सिद्ध नहीं हुआ।" यहाँ क्रिश्चियन साइंस की एक निश्चित और प्रेरित घोषणा है।

11. 286 : 9-15

मास्टर ने कहा, "बिना मेरे द्वारा कोई पिता (होने का दिव्य सिद्धांत) के पास नहीं पहुंच सकता।" मसीह, जीवन, सत्य, प्रेम के बिना; क्योंकि मसीह कहता है: "मार्ग मैं हूँ." इस मूल पुरुष, यीशु द्वारा पहले से लेकर आखिर तक शारीरिक कार्य को अलग रखा गया था। वह जानता था कि दिव्य सिद्धांत, प्रेम, वास्तविक सब कुछ बनाता और संचालित करता है।

12. 265 : 3-15

मनुष्य आध्यात्मिक अस्तित्व को उसी अनुपात में समझता है जैसा कि सत्य और प्रेम के खजाने हैं। मनुष्यों को ईश्वर के प्रति समर्पण करना चाहिए, उनका स्नेह और उद्देश्य आध्यात्मिक रूप से विकसित होना चाहिए, - उन्हें होने की व्यापक व्याख्याओं के पास होना चाहिए, और अनंत के कुछ उचित अर्थों को प्राप्त करना चाहिए, - ताकि पाप और मृत्यु दर को दूर किया जा सके।

किसी भी तरह से, आत्मा के लिए कुछ भी होने का यह वैज्ञानिक अर्थ, मनुष्य को देवता में अवशोषण और उसकी पहचान के नुकसान का सुझाव देता है, लेकिन मनुष्य में बड़े हुए व्यक्तित्व, विचार और कर्म का व्यापक क्षेत्र, एक अधिक विस्तृत प्रेम, एक उच्च और अधिक स्थायी शांति।

13. 225 : 21-22

प्रेम ही मुक्तिदाता है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वानी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6